राजेंद्र मसूर-1 के उत्पादन की पैकेज प्रणाली

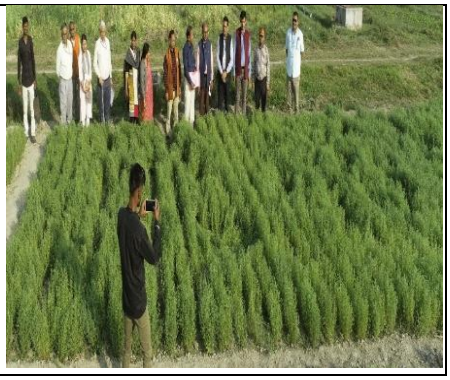

खेत का चुनाव एवं तैयारी: राजेंद्र मसूर-1 की अच्छी पैदावार के लिए हल्की दोमट मिट्टी वाली भूमि सर्वोत्तम है। मृदा में नमी धारण क्षमता अच्छा होनी चाहिए। एक जुताई मिट्टी पलटने वाली हल से तथा 2 जुताई कल्टीवेटर या रोटावेटर से करनी चाहिए तथा पाटा देना चाहिए।

बीज दर एवं बोने की विधि: राजेंद्र मसूर-1 की अच्छी पैदावार के लिए 30-35 किलोग्राम प्रति हेक्टर बीज की मात्रा का इस्तेमाल करना चाहिए। बीज का बुआई सीडड्रिल से करना उत्तम है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर होनी चाहिए।

बीज उपचार: राजेंद्र मसूर-1 की बुवाई से पूर्व अनुसंशित बीज की मात्रा को फफूंद नाशक, कीटनाशक तथा राइजोबियम से उपचारित करने अच्छे परिणाम मिलता है। बुवाई के के 4-5 घंटा पूर्व कार्बेंडाजिम 1 ग्राम प्रति किलोग्राम; क्लोरपाइरीफोस 3 मि0ली0 प्रति किलोग्राम बीज दर से करना चाहिए । 4-5 घंटा बाद राइजोबियम कल्चर 5 पैकेट /हेक्टर की दर से उपयोग करना चाहिए जिसे गुड़ या चीनी के 10 प्रतिशत घोल के साथ मिलकर बीज उपचारित करते है ।

बीज बुवाई का समय: 15 अक्टूबर से 15 नवंबर

उर्वरक: 20:40:20:20 (N:P:K:S) किलोग्राम प्रति हेक्टर + 2% यूरिया घोल का छिरकाव पुषपन से पूर्व करना अधिक उत्पादन में सहायक होता है।

सिंचाई: प्रायः सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। सूखे की स्थिति हल्की फुहारा (स्प्रिंकलर) सिंचाई की जा सकती है। सिचाई बुआई के 35 से 45 दिनों के उपरांत करना आवश्यक है।

निकाई-गुहाई: बीज बोने के 25 से 30 दिन के बाद पहली बार निकाई-गुहाई की जा सकती है । दूसरी निकाई-गुहाई आवश्यकतानुसार 35 दिनों में की जा सकती है। पंक्तियों में फसल बोने पर निकाई-गुहाई हल या हैंड हो से करना सर्वोत्तम है। कुल मिलाकर आवश्यकता अनुसार 2 बार निकाई-गुहाई होती है। श्रमिको के आभाव में बुआई के तुरंत बाद 1 लीटर पेंडी मेथिलीन खरपतवारनाशी 600-700 लीटर पानी के घोल बनाकर शाम का समय ज़मीन के ऊपर छिरकाव करने से सभी प्रकार के खरपतवार को उगने से रोका जा सकता है।

उपज: अच्छे फसल प्रबंधन कर 18-20 क्विंटल प्रति हेक्टर मसूर का उत्पादन कर सकते है।